कलीसिया के विकास के लिए सिद्धांत

(4:7-16)

ट्रेनिंग कर रही सेना की एक टुकड़ी को दिए गए दो जंगी जहाज़ युद्धाज़्यास के लिए समुद्र में थे। बारिश, ऊंची लहरों व तूफ़ान से मौसम खतरनाक बन गया था। रात भर मौसम खराब रहा। स्थिति पर नज़र रखने के लिए जहाज़ का कैप्टन पुल पर रुक गया।

अंधेरा होने के थोड़ी देर बाद पुल के विंग के चौकीदार ने आवाज़ दी, ''जहाज़ के स्टारबोर्ड बो को हल्का कर दो।''

कैप्टन ने पूछा, ''ज़्या यह अपनी जगह पर है या पीछे हो गया है ?''

''अपनी जगह पर ही है, कैप्टन।''

लग रहा था कि दूसरे जहाज़ से इसकी टज़्कर हो जाएगी।

कैप्टन ने निर्देश दिया, ''उस जहाज़ को सिगनल दो कि 'टज़्कर हो सकती है इसलिए हमारा सुझाव है कि जहाज़ को 20 डिग्री घुमा दो।' ''

जवाब मिला: ''हमारा परामर्श है कि आप 20 डिग्री मोड़ दो।''

कैप्टन ने एक और संदेश भेजा: ''मैं कैप्टन बोल रहा हूं; जहाज़ को 20 डिग्री घुमा दो।''

जवाब आया ''मैं सी मैन सैकेंड ज़्लास हूं।'' ''अच्छा होगा यदि आप 20 डिग्री घुमा लें।''

तब तक कैप्टन क्रोधित हो चुका था, ''उनसे कहो, 'मैं जंगी जहाज़ हूं। 20 डिग्री घूम जाओ।' ''

सिगनल लाइट से संदेश आया, ''मैं लाइट हाउस हूं। 20 डिग्री मुड़ जाओ।''

कैप्टन ने तुरन्त अपने आदमियों को रास्ता बदलने का आदेश दे दिया।

कैप्टन एक अवधारणा पर अर्थात स्थिति को ध्यान में रखकर चल रहा था। वह ऐसा तब तक करता रहा जब तक उसका सामना वास्तविकता से नहीं हुआ। जब उसे पता चला कि वह प्रकाश एक लाइट हाउस से आ रहा है तो उसे रास्ता बदलने का फैसला लेना पड़ा।

लाइट हाउस हम सिद्धांतों को कह सकते हैं। बाइबल में बहुत से लाइट हाउस किस्म के सिद्धांत हैं। वे कल भी सत्य थे, आज भी सत्य हैं और हमेशा सत्य रहेंगे।

बाइबल विवाह के लिए लाइट हाउस है, जैसे, जीवनभर के लिए एक पुरुष के लिए एक

स्त्री का सिद्धांत (रोमियों 7:1-3)। यह माता-पिता के लिए लाइट हाउस के सिद्धांत देती है, जैसे बच्चों के पालन-पोषण का ढंग कि उनकी अगुआई कैसे होनी चाहिए (इफिसियों 6:4)। इसमें बच्चों के लिए (6:1-3), नियोज़्ताओं तथा कर्मचारियों के लिए (6:5-9), धन के इस्तेमाल के लिए (1 तीमुथियुस 6:9, 10), योजनाएं बनाने के लिए (याकूब 4:13-15) और जीवन की सब बातों के लिए (2 पतरस 1:3) लाइट हाउस वाले सिद्धांत हैं।

नया नियम कलीसिया के लिए भी लाइट हाउस वाले सिद्धांत देता है। इफिसियों की पत्री में इन सिद्धांतों में से कुछ सिद्धांत मिलते हैं। परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली सभी आत्मिक आशिषें मसीह में हैं (1:3)। मसीह कलीसिया का सिर है (1:22)। कलीसिया मसीह की देह है (1:23)। विश्वास के द्वारा अनुग्रह से हमारा उद्धार होता है (2:8)। मिलकर हम एक ही देह के अंग हैं (3:6)। एक ही देह और एक ही आत्मा; एक ही आशा; एक ही प्रभु; एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा; एक ही परमेश्वर और पिता है (इफिसियों 4:4-6)।

इफिसियों 4:7 से आगे, हमें कलीसिया के विकास की एक आयत मिलती है। इसमें कुछ लाइट हाउस सरीखे सिद्धांत दिए गए हैं, जो हमारे लिए कलीसिया के विकास पर ज़ोर देने में सहायक हो सकते हैं।

कलीसिया की उन्नति के लिए अपर्याप्त सिद्धांत

बाइबल के सिद्धांतों की समीक्षा करने से पहले, कलीसिया के विकास के लिए सामान्य तौर पर माननीय सिद्धांतों पर ध्यान देते हैं। ये सिद्धांत सहायक तो हो सकते हैं, परन्तु कई बार इन पर आवश्यकता से अधिक ज़ोर दिया जाता है। अपने आप में वे अपर्याप्त ही हैं।

1. ''कलीसिया भी उन्नति करती है जब हम अच्छी तरह योजना बनाते और आधुनिक कार्यक्रमों को लागू करते हैं।'' यह बताने के लिए कि कलीसिया के विकास के लिए कौन सा ढंग असरदायक है, बहुत सी किताबें लिखी गई हैं। उन किताबों में बताया जाता है कि किस प्रकार प्रार्थना के लिए किसी के घर जाने, मार्केटिंग, विचार, बाइबल स्कूल और बहुत से अन्य विकल्पों के द्वारा कलीसिया बढ़ती है। कलीसिया के विकास सज़्बन्धी पुस्तकों के अलावा, सफल मण्डलियों का अध्ययन भी होता है। कलीसिया के अगुवे विकासशील मण्डलियों को यह पता लगाने के लिए कि इसके अगुवे सही कार्य कर रहे हैं, समझाते हैं। वे किताबें और टेपें खरीदते हैं, सेमिनारों में जाते हैं और यह मानकर घर जाते हैं कि स्थानीय कलीसिया को बढ़ाने के लिए उन्हें योजना मिल गई है।

2. ''कलीसिया की उन्नति तभी होती है जब कोई कलीसिया सुशिक्षित अर्थात सेवकों का पेशेवर स्टाफ शामिल करे।'' हम विभिन्न प्रकार के स्टाफ के युग में रह रहे हैं। आज कलीसिया में प्रीचिंग मिनिस्टर, यूथ मिनिस्टर, फैमिली मिनिस्टर, एजूकेशन मिनिस्टर और अविवाहितों के लिए मिनिस्टिर आदि होते हैं। जितना शिक्षित स्टाफ होगा उतना ही कलीसिया की उन्नति होगी।

3. ''कलीसिया का विकास तभी होता है जब कलीसिया के हर कार्यक्रम के सब सदस्य शिक्षित हों।'' कलीसिया के अगुवे चाहते हैं कि हर सदस्य इसके कार्यक्रमों में भाग

ले। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को ''शुरू करने'' के लिए लोगों को भर्ती करके उन्हें शिक्षित किया जाना चाहिए। कलीसिया का विकास सुनिश्चित करने के लिए इसकी अपेक्षा की जाती है।

4. ''कलीसिया का विकास लोगों की उपस्थिति, चंदे और कलीसिया द्वारा संचालित कार्यक्रमों से हो सकता है।'' जब लोग बुलेटिन में पढ़ते हैं कि किसी स्थानीय कलीसिया की उपस्थिति और चंदा पिछले साल में दोगुना हो गया है, तो वे सोचते हैं कि ''वह मण्डली बढ़ रही है। वे उन्नति कर रहे हैं।'' कई बार हम देखते हैं कि कोई कलीसिया सभाएं करने, कार्यक्रम बनाने, सेमिनारों, आयोजनों तथा वरिष्ठ नागरिकों की सभाएं करने में व्यस्त रहती है। हम उस मण्डली के बारे में निष्कर्ष निकालते हैं, ''यह अवश्य बढ़ रही है।''

ये चार सिद्धांत कलीसिया के बहुत से अगुओं द्वारा बताए जाते हैं। हर कथन में सच्चाई का तत्व तो है, परन्तु यह ढंग कलीसिया के विकास के लिए पर्याप्त नहीं है।

कलीसिया की उन्नति के लिए लाइट हाउस के सिद्धांत

हमें चाहिए कि कलीसिया के विकास से सम्बन्धित लाइट हाउस के कुछ सिद्धांतों की समीक्षा करते हुए, इफिसियों की मण्डली के नाम पौलुस के पत्र को पढ़ें:

> पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है। इसलिए वह कहता है, कि वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए। (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह, कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे)। और उस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं। ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों। बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिणाम से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए (4:7-16)।

सिद्धांत एक

उद्धार की तरह ही, कलीसिया का विकास भी अनुग्रह से ही होता है। पौलुस ने कहा,

''पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है'' (4:7)। उद्धार अनुग्रह के कारण (2:8), और अनुग्रह से भी होता है, जिसका उल्लेख पौलुस ने इस आयत में किया। अनुग्रह से उद्धार की बात परमेश्वर की महिमा के लिए कुछ विशेष करने की क्षमता है। रोमियों की पत्री में पौलुस ने यही विचार दिया: ''... उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न वरदान मिले हैं'' (रोमियों 12:6)। कार्यकारी अनुग्रह कलीसिया के वास्तविक विकास की कुंजी है। कलीसिया का विकास हमारी योजनाओं या नीतियों से ही नहीं होता। यह विकास उस अनुग्रह के कारण होता है जो यीशु हर मसीही को देता है अर्थात उस अनुग्रह के द्वारा जो हर व्यक्ति को वरदान पाया हुआ बताता है।

मुझे स्टीवन्स की बात अच्छी लगती है:

> हर सदस्य को मसीह से अनुग्रह पाया हुआ मानने वाली कलीसिया में प्रत्येक सदस्य को पुरस्कृत किया जाएगा, हर सेवक को सराहा जाएगा, मसीह के अनुग्रह का हर अनुभव सज़्भालकर रखा जाएगा। ऐसे माहौल में ''मुझे आपकी आवश्यकता है'' का संदेश जाएगा![2]

कलीसिया का हर सदस्य महत्वपूर्ण है। अगले रविवार को स्थानीय मण्डली के इधर-उधर देखें। वहां उपस्थित हर विश्वासी मसीह के चेहरे पर आपको परमेश्वर का अनुग्रह स्पष्ट दिखाई देगा। मसीही लोगों को दिए गए अनुग्रह के द्वारा कार्य करके परमेश्वर कलीसिया के विकास के लिए आवश्यक अनुग्रह तथा वरदान देता है।

सिद्धांत दो

कलीसिया की उन्नति तभी होती है जब सब मसीही उस अनुग्रह से, जो उन्हें मिला है, सेवा करते हैं। बहुत सी मण्डलियों ने अपने लैटरहैड पर ऐल्डरों, डीकनों तथा सेवकों (मिनिस्टर्स) का नाम दिया होता है। ''मिनिस्टर्स'' प्राय: प्रचारकों को कहा जाता है। यह शज़्द भ्रमित करने वाला हो सकता है। वास्तव में स्थानीय कलीसिया के मिनिस्टर या सेवक तो इसके सब सदस्य हैं। वैतनिक कार्यकर्ज़ाओं सहित किसी दूसरे की तरह आप भी कलीसिया के सेवक हैं। आप मसीह के अनुग्रह के सेवक हैं।

4:16 में हम पढ़ते हैं, ''जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिणाम से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।'' इस आयत से मुझे परमेश्वर के कार्य में शामिल होने के लिए लोगों को उत्साहित करने के अपने ढंग को फिर से जांचने की चुनौती मिलती है। मैं इस ढंग का इस्तेमाल हमेशा इस तरह करता था: यदि किसी विशेष कार्यक्रम में सहायता की आवश्यकता होती, तो मैं उस कार्य को करने के लिए लोगों को भर्ती करने की कोशिश करता। सेवकाई के मौजूदा क्षेत्रों में मैंने ज्यादा से ज्यादा लोगों को भर्ती करने की पूरी कोशिश की। इसे कहने का अच्छा ढंग यह होना था, ''प्रभु के लिए आपने सबसे अच्छा ज़्या किया? आपको ज़्या लगता है कि उस सेवकाई को

करने के लिए, जिससे उसके नाम को महिमा मिलती है कि यीशु आपसे ज़्या करवाना चाहेगा? हम उस कार्य को करने के लिए आपकी सहायता करना चाहते हैं।''

हर मसीही कलीसिया में अनुग्रह का एक सेवक या मिनिस्टर है। यीशु ने आपको कलीसिया में वह सेवकाई करने के लिए दी है, जो उसके मन में आपके लिए थी।

सिद्धांत तीन

कलीसिया तभी उन्नति करती है जब अगुवे सेवकाई के लिए लोगों को तैयार करने के लिए समर्पित हों। पौलुस ने कहा:

> और उस ने कितनों को प्रेरित नियुज़्त करके, और कितनों को भविष्यवज़्ता नियुज़्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुज़्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुज़्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए (4:11,12)।

हमने पौलुस के निर्देशों को कक्षाओं, ट्रेनिंग प्रोग्रामों और वर्कशॉपों में अर्थात कलीसिया में इस्तेमाल करने के लिए लोगों को सिखाई जाने वाली किसी भी बात से लागू किया है। परन्तु इससे ''उन्नति'' के विचार पर रोक लग जाती है। उन्नति में सेवकाई के लिए तैयार करने के लिए व्यज़्ति को सहायता देना आवश्यक है; परन्तु इससे भी बढ़कर इसका अर्थ *चरित्र, मन तथा व्यज़्ति के हृदय को आकार देना है।*

यीशु सेवकाई के लिए लोगों को तैयार करने में सर्वोज़म था। उसने बारह लोगों को तैयार करने के लिए उनके साथ तीन वर्ष का समय बिताया। मैंने कहीं नहीं पढ़ा कि यीशु ने उन्हें कोढ़ियों की सेवा के लिए दस बातें याद करने के लिए कहा हो। मुझे यह कहीं पढ़ने को नहीं मिला कि उसने उन्हें कलीसिया का प्रबन्ध करने की शिक्षा दी। परन्तु यह अवश्य मिलता है कि उसने उनके साथ समय बिताया। उन्होंने उसकी सामर्थ देखी जिस कारण वे घुटनों के बल हो गए। उन्होंने उसे प्रार्थना करते सुना और उन्हें प्रार्थना करना आ गया। यीशु के साथ होने के कारण, चेलों को परमेश्वर की संतान के रूप में रहना आ गया।

कलीसिया के अगुओं को इसी नमूने का पालन करना चाहिए। यीशु के साथ रहकर, अर्थात वचन में, आराधना में और प्रार्थना में उसके साथ समय बिताकर मसीही लोग सीखते हैं कि परमेश्वर की संतान के रूप में कैसे रहना है। हमारी आराधना सभाएं ऐसी होनी चाहिए जिनसे हमारे हृदय परमेश्वर के लिए भूखे और प्यासे हों। हमें परमेश्वर के वचन से ऐसे निर्देश चाहिए जिससे हमारे मन बदलकर नये बन जाएं। हमें दूसरे मसीही लोगों के साथ ऐसे निकट सज़्बन्ध बनाने की आवश्यकता है जिससे हमारा समर्पण तथा एक दूसरे के प्रति हमारी निर्भरता बढ़ जाए। यीशु कलीसिया के अगुओं को उन्नति करने के लिए बुलाता है, जिसके लिए यीशु के सेवक-मन तथा सोच वाले मसीही लोगों का बढ़ना आवश्यक है।

सिद्धांत चार

कलीसिया की उन्नति परमेश्वर की नज़र में परिपज्वता में देखी जाती है। परमेश्वर के लोगों को सेवा के कार्य के लिए तैयार किया जाता है जिससे ''मसीह की देह उन्नति पाए'' (4:12)। पौलुस ने इसके लिए चाहा कि ''जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं'' (4:13)। पौलुस ने शरीर के विकास (4:15) और अपने आप को बढ़ाने का उल्लेख करते हुए (4:16) बढ़ने की प्रक्रिया पर ज़ोर दिया। बढ़ने का विचार पौलुस के लेखों में पूरी तरह छाया रहा।

परमेश्वर की दृष्टि में कलीसिया का विकास उसका परिपज्व होना है, न कि सदस्यों की वृद्धि। परमेश्वर उस रूप को देखने के लिए जिसे वह पहचानता है, हमारे मनों में झांकता है। वह हम में अपने पुत्र के रूप को पाने की उज़्मीद करता है। वह चाहता है कि हम में मसीह का मन हो।

सारांश

कलीसिया के विकास के लिए हमने लाइट हाउस की तरह चार सिद्धांतों की समीक्षा की है। यदि हम इन सिद्धांतों को मानें, तो परमेश्वर हमारी स्थानीय मण्डलियों को बढ़ने वाली मण्डलियों के रूप में देखेगा।

व्यज़्ति के रूप में आपकी स्थिति ज़्या है? ज़्या आप उस मण्डली के लिए अपने आप को दे रहे हैं जिसके आप सदस्य हैं? आप अपने आप में यीशु के अनुग्रह को ले जा रहे हैं जिसे दूसरों के साथ बांटना आवश्यक है। ज़्या आप उस अनुग्रह के विश्वासी सेवक बन रहे हैं?

अगुओ, आप कार्यक्रमों के छिद्र भर रहे हैं या कलीसिया के लिए लोगों को उन्हें दिए विशेष तोड़ों का इस्तेमाल करने में सहायता दे रहे हैं? ज़्या आप ऐसा माहौल बनाने के लिए जिसमें लोगों के मन और सोच सेवक बन सकें, योगदान दे सकते हैं?

ज़्या हम में से हर एक मन की परिपज़्वता का लक्ष्य लिए हुए हैं? ज़्या हम मसीह का मन रखने की इच्छा करते हैं? मसीह ने हमें आश्वस्त किया है कि यदि मैं अपना योगदान दूं, आप अपना योगदान दें और अगुवे अपना योगदान दें, तो कलीसिया की उन्नति ऐसे होगी जिससे परमेश्वर के नाम की महिमा होगी।

टिप्पणियां

[1]फ्रैंक कौच, स्टीवन कोवे, *द 7 हैबिट्स ऑफ हाइली इफेज़्टिव पीपल: पावरफुल लैसन्ज़ इन पर्सनल चेंज* (न्यू यॉर्क: साइमन एण्ड शुस्तर, 1989), 33 द्वारा उद्धृत। [2]आर. पॉल स्टीवन्ज़, *लिब्रेटिंग द लेयटी: इज़्चिपिंग ऑल द सेंट्स फॉर मिनिस्टरी* (डाउनर्ज़ ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1985), 30.